संख्या-17/2020/2223/22-2-2019-17(969)/2019

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव
उत्तर प्रदेश, शासन।

सेवा में,

पुलिस महानिदेशक/महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

***कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2*** ***लखनऊ दिनांक 08 जनवरी, 2020***

विषय:- जिला कारागार, मेरठ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी रोहताश पुत्र किशना सिंह निवासी जिला-मेरठ की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-24538/प्रोबेशन-3/फार्म-ए (एम-26.06.2019) दिनांक-08.08.019 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार जिला कारागार, मेरठ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी रोहताश पुत्र किशना सिंह, जो-मौ0 अनाजमण्डी, थाना-हस्तिनापुर, जनपद-मेरठ का रहने वाला है। गुर्जर एवं जाटव समुदाय का आपसी विवाद था जिसमें गुर्जर समुदाय के लोगों द्वारा जाटव समुदाय के 06 लोगों की हत्या कर दी गयी। इसी रंजिश में बदला लेने के इरादे से बंदी ने दिनांक 16/17.01.1997 की रात्रि में 07 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर गुर्जर समुदाय के लोगों पर हमलाकर 06 लोगों की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-947/1997 में भा0द0वि0 की धारा-307/149, 302/149 के अन्तर्गत मा0 न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-05 मेरठ के आदेश दिनांक 21.04.1999 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, मेरठ ने मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में बंदी का अपराध समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करने, बंदी के अपराधी प्रवृत्ति का होने के कारण भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, बंदी को जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, बंदी अपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होने, समयपूर्व रिहा होने पर पुन: घटना घटित करने, की आख्या अंकित करते हुये बंदी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की है। जिला मजिस्ट्रेट, मेरठ द्वारा बंदी का अभिभावक उपयुक्त होने की आख्या अंकित की है, किन्तु बंदी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की गयी है।

बोर्ड के सदस्यों का अभिमत है कि बंदी ने जाटव समुदाय के 06 लोगों की हत्या का बदला लेने के इरादे से बंदी ने दिनांक 16/17.01.1997 की रात्रि में 07 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर गुर्जर समुदाय के 06 लोगों की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बंदी का अपराध समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करने, बंदी के अपराधी प्रवृत्ति का होने के कारण भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, जेल में आगे और निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने का अंकन जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

मजिस्ट्रेट, ने निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बंदी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता,जघन्ता, जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बंदी की समयपूर्व रिहाई का विरोध किये जाने के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी रोहताश पुत्र किशना सिंह को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की **संस्तुति नहीं की** गयी है।

3- उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी रोहताश (बन्दी संख्या-9108/2011) पुत्र श्री किशना सिंह, निवासी जनपद-मेरठ के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट,1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति श्री राज्यपाल द्वारा **अस्वीकार** कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर
संयुक्त सचिव।

संख्या-17/2020/2223(1)/22-2-2019 तद्दिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, मेरठ ।

2- वरिष्ठ अधीक्षक, जिला कारागार, मेरठ ।

3- निजी सचिव, मा0 राज्य मंत्री, कारागार विभाग, उ0प्र0 को मा0 मंत्री जी को सूचनार्थ।

4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

**शासनादेश संख्या-17/2020/2223/22-2-2019-17(969)/2019**

**दिनांक 08 जनवरी, 2020 का संलग्नक**

**सरकार के आदेश**

जिला कारागार, मेरठ में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी रोहताश पुत्र किशना सिंह, जो-मौ0 अनाजमण्डी, थाना-हस्तिनापुर, जनपद-मेरठ का रहने वाला है। गुर्जर एवं जाटव समुदाय का आपसी विवाद था जिसमें गुर्जर समुदाय के लोगों द्वारा जाटव समुदाय के 06 लोगों की हत्या कर दी गयी। इसी रंजिश में बदला लेने के इरादे से बंदी ने दिनांक 16/17.01.1997 की रात्रि में 07 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर गुर्जर समुदाय के लोगों पर हमलाकर 06 लोगों की हत्या कर दी। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-947/1997 में भा0द0वि0 की धारा-307/149, 302/149 के अन्तर्गत मा0 न्यायालय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोर्ट संख्या-05 मेरठ के आदेश दिनांक 21.04.1999 द्वारा आजीवन कारावास से दण्डित किया गया। जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक, मेरठ ने मा0 उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में बंदी का अपराध समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करने, बंदी के अपराधी प्रवृत्ति का होने के कारण भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, बंदी को जेल में और आगे निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने, बंदी अपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति होने, समयपूर्व रिहा होने पर पुन: घटना घटित करने, की आख्या अंकित करते हुये बंदी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की है। जिला मजिस्ट्रेट, मेरठ द्वारा बंदी का अभिभावक उपयुक्त होने की आख्या अंकित की है, किन्तु बंदी की समयपूर्व मुक्ति की संस्तुति नहीं की गयी है।

बोर्ड के सदस्यों का अभिमत है कि बंदी ने जाटव समुदाय के 06 लोगों की हत्या का बदला लेने के इरादे से बंदी ने दिनांक 16/17.01.1997 की रात्रि में 07 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर गुर्जर समुदाय के 06 लोगों की हत्या करने का जघन्य अपराध कारित किया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बंदी का अपराध समाज को व्यापकरूप से प्रभावित करने, बंदी के अपराधी प्रवृत्ति का होने के कारण भविष्य में अपराध करने का अवसर होने, पुन: अपराध करने में अशक्त न होने, जेल में आगे और निरूद्ध रखने का सार्थक प्रयोजन होने का अंकन जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट, ने निर्दिष्ट 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। इस प्रकार बंदी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता,जघन्ता, जिला प्रोबेशन अधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा बंदी की समयपूर्व रिहाई का विरोध किये जाने के दृष्टिगत प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी रोहताश पुत्र किशना सिंह को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की **संस्तुति नहीं की** गयी है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त श्री राज्यपाल द्वारा बंदी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार कर दी गयी है।

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर
संयुक्त सचिव।

---

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नही है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in